धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अप्रैल- 2013

* चार महान सत्य
* जो काम खुद नहीं करते उनकी अपेक्षा भी न करें
* गंगा अभी सूखी नहीं
* पाठकों की ओर से
* अमेरीका के एक विचार शील जन का स्वप्न किस तरह पूरा हुआ?
* पाप और पुण्य की बुनियाद कहां है?
* जब एक दुखी मां की पूरी हुई आस
* शुभ संग्राम

8 जनवरी सन् 1915

बनाने और ढाने दोनों बातों मे एक ही नियम काम करता है। दीवार बनाने में जैसे एक एक ईंट रखनी पड़ती है, एक के अनन्तर दूसरी और दूसरी के अनन्तर तीसरी रखने से दीवार बन जाती है वैसे ही ढाने में इस अमल की आवश्यकता है। पहले एक ईंट को निकालो, फिर दूसरी, फिर तीसरी, इसी तरह सारी दीवार बिलकुल ढै जावेगी। यही नियम अपने आत्मा में से अंह अनुराग आदि नीच शक्तियों को दमन करने और नाना प्रकार की उच्च शक्तियों को पैदा करने का है। प्रतिदिन की ज़िंदगी में जब ही किसी के संबंध में कोई अपमानकारी घटना हो, तब ही हाथ जोड़ो, माफी मांगो, उस हानि का जहां तक संभव हो, परिशोध करो, तब अवश्य अंह का अधिकार घटता जाएगा। जितना अधिक ऐसा अमल कर सकोगी, उतना ही इस नीच अनुराग के रदे घटते जाएंगे। फिर जब देखो कि तुम्हारे अंह पर उचित चोट लगने से तुम्हें दुःख नहीं होता, तब समझो कि यह नष्ट हो गया है। परन्तु जब तक ऐसी अवस्था न आवे, इस के रदों को बराबर धैर्य और हिम्मत के साथ निकालते जाने की आवश्यकता है। फर्ज़ करो कि यदि तुमने फीरोजपुर से लाहौर आना हो और तुम क़सूर में आ कर ही कहो, कि अब तो मुझ से औरआगे जाया नहीं जाता, तो तुम लहौर न पहुंच सकोगी। इसी प्रकार से एक बार माफी मांग कर यादि तुम यह कहो कि अब तो मुझ से बार बार माफी मांगी नहीं जाती, रोज़ रोज़ तो मुझसे हाथ नहीं जोड़े जाते, रोज़-रोज़ मुझ से नीचा नहीं हुआ जाता, तो अंह नष्ट न होगा। जैसे हम अपनी शारीरिक रक्षा और पालन के लिए प्रतिदिन खाना खाते हैं, दिन में दो बार चूल्हा फूंकते हैं और इस के भिन्न प्रतिदिन कई अंगों के द्वारा गंद निकालने का काम भी करते हैं, ऐसा क्यों करते हैं? इसलिए कि हम जानते हैं कि ऐसा करने के बिना हम ज़िन्दा नहीं रह सकते। वैसे ही हमें अपने आत्मिक जीवन की रक्षा, शुद्धि और उन्नति के लिए भी प्रतिदिन उचित आहार पाने और अपनी मैल को धोने की नितान्त आवश्यकता है। हां यदि तुमने ज़िंदगी का सफर तै करना है, तो तुम्हें प्रतिदिन बनाने और ढाने के असूल को सामने रखना चाहिए और एक को पैदा करने और दूसरे को मिटाने के लिए यत्न करना चाहिए।

दुनिया में धर्म साधन के नाम से पूजा पाठ आदि तो बहुत जारी है, परन्तु उनसे शुभ फल कुछ नहीं निकलता। अब यह तुम्हारा फर्ज़ है कि तुम्हारे साधन दुनिया के लोगों के पूजा पाठ की न्याईं न हों। तुम्हारे साधनों की विशेषता होनी चाहिए, वरना यदि उनकी न्याईं तुम्हारे साधन भी तुम्हारे जीवन में कोई उच्च परिवर्तन लाने का काम न करें तो वह सब निष्फल हैं। ऐसे साधन किसी काम के नहीं।

यदि कहलाने वाले किसी तीर्थ स्थान पर जाने या गंगा में डुबकी लगाने से पाप चले जाते, वा कोई हानिकारक शक्ति नष्ट हो जाती, तो हम बड़ी खुशी से तुम्हें अपने किराया पर गंगा भेज देते और कहते कि एक दफा छोड़ तीन दफा डुबकी लगा आओ, परन्तु शोक! वहां डुबकी लगाने से न तो कोई नीच शक्ति नष्ट होती है और न ही कोई उच्च शक्ति पैदा होती है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अपने निज के सच्चे धर्म साधनों की आवश्यकता है और उस सारे कोर्स में से गुज़रने की आवश्यकता है कि जिस की हम शिक्षा देते हैं।

(देव बाणी)

धर्म जीवन

खण्ड 26 अंक 4

अप्रैल – 2013

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

चार महान सत्य

यह विश्व सत्य ज्ञान की महान खान वा पुस्तक है, इसके सभी विभागों के सम्बन्ध में सचाईयों की खोज में, जब से मनुष्य पैदा हुआ है, लगा हुआ है। अवलोकन, विश्लेषन, निष्कृश आदि द्वारा खोज को ही विज्ञान या वैज्ञानिक विधि कहते हैं। भौतिक, वनस्पति, पशु जगत आदि के सम्बन्ध में अथाह ज्ञान खोजा जा रहा है। मनुष्य शरीर का ज्ञान भी मैडीकल सांईस द्वारा खोजा जा रहा है और दिनों दिन यह खोज बढ़ती जा रही है। मनुष्य का मनोविज्ञान का विषय भी खोज का विशेष अंग बन गया है।

विश्व क्या है? इसकी उत्पत्ति कैसे हुई? इसका संचालन कैसे और कौन कर रहा है? इस पर विज्ञान ने नई रोशनी का सैलाब ला दिया है और ला रहा है।

मनुष्य का अस्तित्व क्या है? उत्पत्ति कैसे हुई? इसकी प्रकृति क्या है? यह ऐसे विषय हैं जो मनुष्य की खोज का आदि समय से ही केंदर बने हुए हैं। परन्तु मनुष्य प्रकृति सुख परायण, सुख की प्रेमक, सुख की आशिक होने के कारण अधूरी है, रोगी है, इसने मनुष्य की सोच को भी अधूरा वा रोगी बना रखा है। इसलिए मनुष्य अपनी मूल प्रकृति के सम्बन्ध में कभी पूर्ण सत्य खोजने के अयोग्य रहा है। जैसे पशु अपने शरीर वा अस्तित्व को जानने वा समझने के अयोग्य हैं, उसी प्रकार मनुष्य प्रगतिशील बुद्धि रखकर भी अपनी मूल प्रकृति का सच्चा objective ज्ञान प्राप्त करने के लिए असमर्थ्य है। मनुष्य सुख दुख का विवेक रखता है, उसकी सारी सोच सुख प्राप्ति पर ही केन्द्रित है। दुख का मूल कारण क्या है? दुख का सच्चा निवारण कैसे होता है? कैसे मनुष्य प्रकृति सुखों की आशिक होकर सुखों को भोग भोग कर मरने और दुखिया बनने के लिए बेबस है। इन दुखों से अपने आप बचना तो कहां, इनकी प्रकृत भयानकता और हानि को भी मनुष्य अपने आप पूरा पूरा देख नहीं सकता। मनुष्य ने दुख से बचने के जो ढंग, तरीके या क्रियाऐं सोची हैं, वह सब निरर्थक हैं। उसका कोई नाम जपना, सुनना, उसके दुखों और पापों का नाश नहीं करता, उसके और पूजा पाठ, दुआ, नमाज़ रोजे, जियारत या स्नान आदि भी कोई कारगर नहीं होते, कोई दुख दूर नहीं करते। कल्पित धर्मो के विश्वासी होकर मनुष्य भ्रमों भुलेखों का शिकार होकर फजूल तसल्ली में रत हो रहा है। मानवता का दुख, सन्ताप, उसकी अक्ल, बुद्धि और ज्ञान के बढ़ते जाने से भी दिन दूना बढ़ रहा है।

नेचर के अपने विकास क्रम में पौधों, जीवों,

पशुओं, और मनुष्यों की उत्पति हुई है। उसी विकास क्रम में मनुष्य से बहुत ऊपर की मनोविज्ञानिक वृति या योग्यता लेकर परम महान मनुष्य, परम पू० देवता, देवात्मा का विकास हुआ है, जो पहले बेशक मनुष्य की सुख अनुरागी सोच को असम्भव प्रतीत हो, परन्तु विज्ञान की कसौटियों द्वारा पूरा पूरा परीक्षण किया जा सकता है। थोथे पक्षपात से ऊपर होकर उस महानतम हस्ती की सच्ची जांच और परख़ पूर्णता सम्भव है। विकास के क्रम में मनुष्य की पूंछ की तरह, उनके अन्दर से सुख अनुराग के दोष की वृति झड़ गई है। विकास क्रम ने नये, अद्वितीय शुभ अनुराग और सत्य अनुराग को पहली बार उनके भीतर विकसित कर दिया है। शुभ अनुरागों वा सत्य अनुरागों की प्रकृति सुख अनुरागों से पूर्णता रहित और पूर्ण है। उन्होंने अपनी रोशनी में मनुष्य प्रकृति के सम्बन्ध में जो सचाईयां देखी हैं, वह इससे पहले मनुष्य न देख सकता था और न उसने देखी। मनुष्य की प्रकृत मूल प्रकृति को उन्होंने ही रोशन और उज्जवल किया है।

पहली सचाई: यह है कि मनुष्य अन्धेरे का जीव है, वह मनोवैज्ञनिक तौर पर अन्धेर ग्रस्त है। उसको अपनी असल स्थिति की कुछ सोझी नहीं है। उसको अपने अधूरेपन का अपनी मनोवैज्ञानिक हालत का कोई प्रकृत ज्ञान नहीं। वह सुख परायण है, सुख का कीट है, सुख भोग भोगकर वह दुखों का शिकार होता है। इस सचाई की उसे कोई सोझी नहीं। मैं क्या हूं, मुझे कौन चलाता है? संसारिक सम्बन्धियों वा सामानों का मेरे जीवन में क्या स्थान है। मेरे जीवन का मुख्य लक्ष्य क्या है? मेरे जीवन की सच्ची सफलता किस में हैं? मैं दुखों, कष्टों से कैसे बच सकता हूं। जो कुछ मैं सोचता हूं, विश्वास करता हूं, उससे मेरा कोई नुकसान वा मेरी हानि तो नहीं हो रही? इसका उसे कुछ ज्ञान नहीं। वह धन प्राप्ति, पद, मान सम्मान प्राप्ति, शारीरिक सुख, ऐश प्राप्ति, विद्या, ज्ञान प्राप्ति संसारिक सामान वा सम्बन्धियों की प्राप्ति में खूब ग़लतान है, परन्तु उन सब प्राप्तियों से अपने लाभ हानि से ज्यादातर अनजान है। वह गहरे अन्धेरे में पशु स्तर पर ही जीवन जी रहा है। उक्त अन्धेरे के पक्षों को रोशन करने के लिए सोझी वा ज्ञान देने के लिए वह एक विशेष महान रोशनी से खाली वा वंचित है।

दूसरी सचाई है कि वह अपनी मूल और सार हस्ती आत्मा के सम्बन्ध में अनजान है। मनुष्य अपनी हस्ती को केवल शरीर ही देखता वा जानता है। शारीरिक सुखों के लिए ही अपना सारा जीवन व्यतीत करता वा खर्च करता है। जबकि मनुष्य केवल शरीर नहीं आत्मा भी है। वह आत्मा के बारे में कुछ नहीं जानता, जो जानता है वह असत्य, झूठ, कल्पित या मिथ्या है। आत्मा को ब्रह्म का स्वरूप, आत्मा को परमात्मा का अंश, उसका हुकम या उसकी फूक आदि समझता है। यह सब बिल्कुल झूठ और गप्प है। आत्म ज्ञान से मनुष्य बिल्कुल खाली वा वंचित है। आत्मा क्या चीज है? आत्मा किस चीज़ से बनी है? आत्मा की बनावट क्या है? उसके अंग क्या है? आत्मा को लेप लगता है या वह निर्लेप है? परिवर्तन शील है या अपरिवर्तनिय है? आत्मा के कोई रोग हैं, यदि हैं तो क्या है? रोगों से क्या हानि होती है? क्या परिणाम होता है? रोगों से बचने की क्या विधि वा तरकीब है? उसकी कोई दवा या औषधि है? आत्मा की मोक्ष वा मुक्ति क्या है? आत्मा क्या काम करता है? आत्मा का भला क्या है? आत्म हानि क्या है? पुष्य वा पाप क्या होते हैं? इन्सान के शरीर को आत्मा के गर्भ में कौन

बनाता है? मनुष्य को कौन चलाता है? मनुष्य की मौत के बाद क्या होता है? मनुष्य की हस्ती सदा के लिए लोप हो जाती है या उसका कुछ बनता है? यदि बनता है तो क्या बनता है और कैसे बनता है? मनुष्य नहीं जानता मेरा असल वजूद क्या है? मेरे जीवन का क्या लक्ष्य है? यह सारा विश्व वा ब्राहमण्ड क्या है? विश्व में कोई नियम काम कर रहे हैं। वह नियम मेरे वजूद पर भी काम कर रहे हैं या प्रभाव डाल रहे हैं। परिवर्तन का नियम क्या है? विकास और विनाश क्या है? क्या मुझ में भी कोई परिवर्तन हो रहा है? कहां मेरी भलाई है, कहां मेरी तबाही है? मेरे जीवन की चाल क्या है? मैं ठीक चल रहा हूं या खराब दशा की ओर जा रहा हूं? मैं आप अपनी हानि तो नहीं कर रहा? यदि करता हूं तो वह क्या है? मेरे वजूद की सच्ची सफलता क्या है? जो मुझे सुखकर लगता है, वह मुझे ठीक लगता है, क्या वह ठीक है, या उसमें कुछ फर्क है? आदि ऐसे विषय है, जिसके सम्बन्ध में प्रत्येक मनुष्य ही बहुत अनजान है, इस विषयों में वह अधिकतर अन्धेरे में भटक रहा है। यह एक बहुत बड़ी सचाई है। उक्त ज्ञान ही धर्म का ज्ञान है। इस ज्ञान के बिना कोई धर्म ग्रन्थ, या पुस्तक धर्म ज्ञान नहीं। हर देश, हर नगर वा हर जाति का मनुष्य ही आत्म अज्ञानी है, इस ज्ञान से खाली वा वंचित है।

<u>तीसरी सचाई</u> : सब मनुष्य हृदय के लिहाज़ से रोगी हैं। ऋषि, मुनि, जोगी, देवी देवते, गुरू, पीर, पैगम्बर, अवतार सब किसी न किसी अंश रोगी हैं। सुख अनुरागी मनुष्य प्रकृति दोषी प्रकृति है। दोष परायण वा पाप परायण है। मनुष्य हृदय के मोटे रोग मोह, मिथ्या, पाप और अज्ञान हैं। मनुष्य प्रकृति उक्त रोगों का शिकार होने के लिए विवश है। मनुष्य शारीरिक रोगों को तो जानता है, परन्तु आत्मा के रोगों को नहीं जानता, रोग से दुख हानि और नाश की उत्पति होती है। मनुष्य दुखिया है, सारा संसार दुखिया है। इसका कारण मनुष्य के आत्मिक रोग ही हैं। मनुष्य के संस्कार, मनुष्य विश्वास झूठे और मिथ्या हैं। इसलिए मनुष्य अपने कल्पित धर्मों को लेकर अति झूठे और मिथ्या विश्वासों को लेकर जी रहा है। मिथ्या विश्वासों, मिथ्या संस्कारों को लेकर मिथ्या साधन करता है, मिथ्या पूजा पाठ करता है, रोज़े नमाज़, जियारतें, तीर्थ भ्रमण करता है। मनुष्य के झूठे विश्वास संस्कार और साधन सब मनुष्य के रोग हैं महा हानि के कारण हैं। सुखों की गुलामी ने मनुष्य को महा रोगी बनाया हुआ है। सब पक्षों, दुराचारों, दोषों, अपराधों, कत्लों, ज्यादतियों, अन्याय पूर्ण, व्यवहारों और अनर्थों के स्त्रोत मनुष्य के नीच सुखों की गुलामी और बन्धन ही हैं। शारीरिक सुख स्वादों की गुलामी के बन्धन ही हैं शारीरिक सुख स्वादों की गुलामी, धन धरती, पदार्थों, ज़मीन, जायदाद के प्यार की गुलामी, सन्तान के प्यार और सम्बन्धियों के प्यार की गुलामी, अपनी मैं सम्बन्धी प्यारों की गुलामी, आदि आदि सब मनुष्यात्मा के भयानक रोग हैं, जिसका सारे का सारा मनुष्य मात्र, क्या आम और क्या खास बुरी तरह शिकार है। अपने एक एक नीच सुख की गुलामी को साफ महा हानिकारक और महा दुखदाई देखकर भी मनुष्य उस नीच सुख को छोड़ नहीं सकता, घुल घुलकर नाश होने के लिए मजबूर है। दुख, सुख, हानि लाभ, भला बुरा किसी ईश्वर, परमेश्वर, गुरू, पीर, पैगम्बर या देवी देवता की देन नहीं। यह मनुष्य के अपने बढ़ाए हुए नीच सुखों का परिणाम है। जितना मनुष्य नीच सुखों से मुक्त है, उतना ही सुखी है, जितना नीच सुखों का बन्धुआ और गुलाम है, उतना ही दुखी होने के लिए बाध्य है। मनुष्य अपनी नीच

सुखों और उनकी भयानक गुलामी और भयानक हानि को प्रकृत रूप में चाहकर भी देख नहीं सकता और न अपने आप उसमें से निकल सकता है। अपनी इस असमर्थता से भी मनुष्य पूर्ण अनजान है। मनुष्य ज्योति के पक्ष में, आत्मा के पक्ष में, अपने रोगों को देखने के पक्ष में, उनसे मुक्त होने के पक्ष में अपने भीतर योग्यता पैदा करने में असमर्थ्य है। अयोग्य है, पूरी तरह अधूरा है। इन इस सचाईयों को मनुष्य अभी तक न देख रहा है, न पहले किसी ने यह सचाईयां दिखाई हैं। अब प्रश्न पैदा होता है कि मनुष्य के इस अधूरेपन का नेचर में कोई हल या समाधान है? या मनुष्य तरस योग्य अवस्था का सदा शिकार बने रहने के लिए ही है।

चौथी सचाई : उक्त प्रश्न का सही उत्तर है। नेचर की विशाल हस्ती में उसके सदा सत्य वा अटल नियमों का राज है। नेचर में विकास का महान नियम काम करता है। विकास का नियम अचम्भे वा करामातें पैदा करता है, वह ऐसे अस्तित्व पैदा करता है, जो सदा करता रहेगा, जो पहले से अधिक योग्यताएं, नई समर्थ्य और नये अंग लेकर पैदा होते हैं। बहुत गहरी सोच के साथ देखने से विकास क्रम की हर घटना ही क्रिश्मा है। सूर्य, हवा, पानी, पौधे जीव, पशु मनुष्य यह सब विकास के क्रिश्में हैं। सात्विक वा परोपकारी पुरुष, विशेष कर वैज्ञानिक भी विकास क्रम की ही देन हैं। यह सभी नेचर के विकास क्रम में सहायकारी होने के लिए बेबस हैं।

इस अद्भुत विकास के नियम ने ही मनुष्य जगत के विकास क्रम में नया और अति अद्भुत योग्यताएं देकर एक परम मनुष्य, अतिशय महान, परम पूजा के योग्य देवात्मा को पैदा किया है। परम पू० देवात्मा बिल्कुल अमनुष्यी प्रकृति रखते हैं। परम पू० देवात्मा सुख अनुरागों के दोष से मुक्त हैं, इसीलिए सुख अनुरागों की उपज, मिथ्या, पाप और विनाश से भी मुक्त हैं, उन्होंने अपने तपों, त्यागों, कष्टों और समर्पणों द्वारा अति अद्भुत रूहानी रोशनी और रूहानी तेज को विकसित किया है, जिससे वह मनोविज्ञानिक गठन के लिहाज़ से पूर्ण हो गए। मनुष्य का अधूरापन, उसका अन्धेर ग्रस्त होना, उसका अपने ही आत्मा के ज्ञान से शुन्य होना, उसका मिथ्या और भयानक पापों में ग्रस्त होना दुखों और विनाश को प्राप्त होना है। यह सब कुछ परम पू० भगवान देवात्मा ने देखा है और उज्जवल किया है। नेचर के विकास क्रम ने देवात्मा के अद्भुत देव रूप को देकर ऐसा निराला अस्तित्व अर्विभूत किया है, जिनके भीतर मनुष्य की अधूरी आत्मिक गठन को साफ साफ देखने, उसके अधूरेपन का परीक्षण करने कि वह अन्धकार ग्रस्त है, आत्म ज्ञान से खाली है, मिथ्या, भ्रमों वा पापी जीवन का शिकार है, दुखों और विनाश को प्राप्त हो रहा है, पूरी पूरी समर्थ्य बख़्शी है, और इन तीनों अभावों के पूरी तरह अधिकारी मनुष्यों के अन्दर निवारण या दूर करने की भी पूर्ण योग्यता का वरदान दिया है। देवात्मा के आर्विभाव से पहले मनुष्य की उक्त अधूरी आत्मिक बनावट का प्रकृत रूप में किसी को कोई पता नहीं था, न ही मनुष्य के अधूरेपर को दूर करने के कोई सच्चे सामान थे। देवात्मा के आर्विभाव के साथ अधिकारी मनुष्यात्मा की सच्ची प्रकृत रक्षा और विकास के अद्भुत सामान पैदा कर दिए है।

देवात्मा का आर्विभाव, उनका अनोखा देवरूप और उनका नीच जीवन से बचाने और उच्च बनाने का अनोखा कारज चौथी महान और ठोस सचाई है।

बलदेव सिंह

जीवन प्रसंग

जो काम खुद नहीं करते उनकी अपेक्षा भी न करें

मैं पाठकों को नए साल की बधाई देता हूं और चाहता हूं कि नववर्ष मे आप खुद के साथ-साथ दूसरों के बारे में ज्यादा सोचें।

कुछ दिन पहले मैं अपने बेटे गौरव से बात कर रहा था। गौरव इंजीनियरिंग का छात्र है और तामिलनाडु में पढ़ाई कर रहा हैं वह सर्दी की छुट्टी मनाने घर आया था। मैंने बातचीत के दौरान गौरव को मजाक में कहा कि मम्मी-पापा के बूढ़ें हो जाने पर तुम उनका ध्यान रखेगे? वह मुस्कुराया और उल्टा जवाब देते हुए बोला कि पापा मैं कोई नर्स नहीं हूं। मैं आपका बेटा हूं। ये सुन कर मैं चुप हो गया। मैंने महसूस किया कि हम खुद के बारे में काफी सोचते हैं। ये तक सोचने लगते हैं कि दूसरे लोग हमारी मदद कैसे करेंगे। दूसरे लोग हमारे लिए क्या कर सकते हैं। ऐसी सोच रखने से हम खुद को दूसरों पर निर्भर बना देते हैं।

जबकि खुशी का अहसास खुद को सक्षम महसूस करने से और दूसरों की मदद करने के बारे में सोचने से होता है। शाम को अकेले में मैंने महसूस किया कि बेटा घर से दूर है। वह हॉस्टल में अकेले अपने पैरों पर खड़े होने और अच्छा जीवन बिताने की जद्दोजहद कर रहा है। मैंने व्यर्थ ही उसे भविष्य के बोझ के नीचे दबा दिया जो अभी काफी दूर है।

मैंने महसूस किया कि बेटे के जवाब को सुनकर गुस्सा किया होता। उसे कहा होता कि तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई और अच्छे जीवन के लिए दिन-रात एक कर रहे हैं और तुम खुद को नर्स कह रहे हो। तो हमारे रिश्ते में दरार जरूर आ जाती। वह बुरा महसूस करता। मैंने आत्ममंथन किया कि क्या एक बेटे के तौर पर मैं अपने पिता की देखभाल कर रहा हूं? उन्हें अच्छा जीवन देने में सक्षम हूं।

मुझे इसका जवाब 'ना' मिला। इन विचारों के आधार पर मैंने खुद से वादा किया कि मैं अपने पिता के लिए वह सब करूंगा, उन्हें वह खुशियां दूंगा जिसकी अपेक्षा मैं अपने बेटे से कर रहा हूं। मैं आज में जीऊंगा। आज का मजा लूंगा। भविष्य के बारे में सोचकर न समय बर्बाद करूंगा। न ही रिश्तों में दरार आने दूंगा।

पेज 19 का बाकी

वा बलात्कारियों का भुंचाल आया हुआ है। नीच सुख अनुरागों के कारण मनुष्य को ज्योति और शक्ति की जरूरत है जो मनुष्य के पास नहीं है। मेरे पिता जी ने एक कहानी सुनाई थी कि एक नौजवान लड़की लाल भाजी (मांस) खाने के लालच में उन लोगों के साथ चली गई और बर्बाद हो गई। "बहुत सोते जगाए तुम, बहुत डूबे बचाए तुम, बहुत उजड़े बसाए तुम, जी तुम हो धन्य, तुम हो धन्य।" श्रीमान बलबहादुर सिंह जी की तबदीली की संक्षेप कथा सुनाई। हरनेक सिंह जी ने अफीम छोड़ दी। इस सभा में श्रीमान मोहर सिंह जी अपने साथ एक और जन को लेकर आए।

इस प्रकार तकरीबन एक हफते का प्रोग्राम सहायकारियों की सहायता से कुछ न कुछ सफल रहा।

(एक सेवक)

गंगा अभी सूखी नहीं

खन्ना साहिब 35 - 40 वर्ष के बहुत स्वस्थ्य व्यक्ति थे। परन्तु अचानक एक्सिडैंट हो गया है और वह चल बसे। उनके घर से रोने चिल्लाने की आवाज़े आने लगी, तो मुहल्ले वाले इकट्ठे हो गए। परिवारिक जनों को फोन कर दिया। सच कहा है कि दुख कभी कहकर नहीं आता और सुख कभी कहकर नहीं जाता। खन्ना जी मुहल्ले में बहुत लोकप्रिय थे। पोस्टमार्टम के बाद शव को घर में लाया गया, जिसको देखकर पत्नी कौमा में चली गई, एक सात साल की बच्ची जिसका नाम मेघा था, एक कोने में बैठी रो रही थी।

डाक्टर को बुलाया गया, उसने तुरंत ऐंम्बूलैंस मंगवा कर खन्ना साहिब की पत्नी को हस्पताल में भर्ती करवाने के लिए भेज दिया, परन्तु बदकिस्मती से उसने भी रास्ते में ही दम तोड़ दिया। अब वह नन्हीं बच्ची अकेली रह गई। रिश्तेदारों को उनके घर का, बैंक अकाऊंटस का, इन्शुयरैंस पालिसीज़ का फिक़र पड़ गया, परन्तु उस नन्हीं बच्ची की ओर किसी का ध्यान नहीं था।

आख़िर अन्धों को अन्धेरे में सूझी कि उस नन्हीं बच्ची को चिलड्रन होम में छोड़ दिया जाए। इसका संरक्षक कौन होगा, उसका फैसला कोर्ट तय करेगी। मकान और सामान को ताला लगा देंगे। घर वाले वापिस जाना चाहते थे।

उनके पड़ोस में एक बज़ुरग महिला रहती थी, जिनका नाम मालती था और वह रिटायरड अध्यापिका थी, वह मेघा के लिए खाना लेकर आती थी, क्योंकि उसे खाने के लिए पूछने की भी कोई जहमत नहीं उठाता था, सबको डर था कि उसकी ज़िम्मेदारी उन्हें न लेनी पड़ जाए। मालती जी का लड़का न्यूर्याक में रहता था, बेटी पेरिस में, दोनों सौफ्टवेयर इंजनियर थे, उनके अपने घर बस गए थे, वह लोग मालती को अपने पास बुलाते तो वह यही कहती, "बेटा, यहां अपना घर है, सब अपने हैं, अब मैं यहीं ठीक हूं।" बच्चे ही साल में चक्कर लगा जाते। मालती जी रिटायरमैंट के बाद शुरू शुरू में बच्चों के पास कुछ दिनों के लिए रहने चली जाती पर धीरे धीरे उनका जाना कम होता चला गया।

"यह बुढ़िया यहां बार बार क्यों आती है?" मेघा की ताई जी ने अपनी देवरानी से पूछा। अपनी प्रकृति के अनुसार ही उसकी सोच थी। वह कहने लगी, " क्या पता, इसके पास खन्ना जी के रु० रखे हों"।

मालती का दिल डूब रहा था कि इस छोटी सी बच्ची को चिल्ड्रन होम में रखा जाएगा। दूसरे ही दिन रिश्तेदारों में भुचाल आ गया जब मालती अपने साथ मेघा को ले जा रही थी।

रिश्तेदार कह रहे थे तुम इसे अपने साथ नहीं ले जा सकती। मालती ने बताया कि "हां, मैंने कोर्ट में दरख़्वास्त दे रखी हे। इसको अनाथालय भेजना बिलकुल उचित नहीं है, मैंने अपनी जमानत दी है, मैंने इसे गोद ले लिया है, न मुझे इसका मकान चाहिए, न इंश्योरैंस का धन, मेरा खुद का मकान बहुत बड़ा है, यह वहां पढ़ लेगी, मुझे इसे पढ़ाना है, यही मैंने मैजिस्ट्रेट से कहा है और अपनी जमानत दी है। जब

तक कोर्ट का फैसला नहीं आता, तब तक इसे मेरे पास रहने की इजाज़त मिल गई है। आप लोग मकान को ताला लगा दें, मुझे वहां से कुछ नहीं लेना।"

मेघा की मां मालती को आंटी कहा करती थी और आंटी की कोई चीज़ भी मेघा प्रयोग कर लेती थी मालती के पास कैमरा था, मेघा इस्तेमाल कर लेती, कैमरे से कहती नानी मेरी फोटो खींचो। मालती जी का अकेलापन भी इससे दूर हो जाता। परन्तु अब जो कुछ हुआ, इसका किसी को अनुमान नहीं था।

अगले दिन पार्क में बुज़ुर्गों की मीटिंग थी, कुछ उनके इस कदम की सराहना कर रहे थे। सबने मिलकर फैसला किया कि हम सब उसकी परवरिश में सहायता करेंगे।

बस अपने खिलौने वा बैग लेकर मेघा मालती के घर आ गई। मालती के साथ दिन भर रहती, शाम को वह उसे पार्क में ले जाती, परंतु अब वह पहले की तरह चहचहाती नहीं थी। मालती जी उसे खुद पढ़ाने लगी। उसके लिए नये कपड़े लाती, खिलौने लाती, इस प्रकार मालती का खालीपन भी भर गया और उस अनाथ बच्ची को नई ज़िन्दगी मिलने लगी।

इस प्रकार मालती की मेहनत वा स्नेह के द्वारा मेघा 10वीं कलास पास कर गई। उनके पड़ोस में एक कैमिस्ट्री के अध्यापिक रहने आ गए। एक दिन मुहल्ले के बुज़ुर्गों ने उनके घर की घण्टी बजाई, जब दरवाज़ा खोला तो अध्यापिक ने सोचा कि कोई चन्दा लेने आए होंगे। तब उन्होंने बताया कि वह सब पार्क की कमेटी के सदस्य हैं। हम आपके पास एक प्रार्थना लेकर आए हैं। तब उन्होंने मेघा के साथ जो दुर्घटना घटी थी उसके विषय में बताया और मालती जी कैसे उसको पालपोस रही हैं, उसके विषय में भी बताया। उन्होंने कहा कि वह सब उस बच्ची के लिए ही सहायता मांगने उनके पास आए हैं। फिर मेघा के दसवीं में मैरिट में आने के विषय में बताया और कहा कि वह डाक्टर बनना चाहती है। वह उनके स्कूल में पढ़ना चाहती है, बेशक वह स्कूल बहुत महंगा है, हम आटो लगा देंगे, परन्तु आप उसका स्कूल में ध्यान रखें, क्योंकि वह भी उसी स्कूल में अध्यापक था। अध्यापक ने बताया कि अब तो सीटें भर चुकी हैं, इसने ऐंट्रेस टैस्ट भी नहीं दिया (क्योंकि उन दिनों वह बिमार हो गई थी) फिर भी उन्हें उन्होंने अगले दिन स्कूल आने के लिए कहा।

अगले दिन सारे बज़ुरग स्कूल में पहुंच गए। अध्यापक मेघा की मार्कशीट लेकर प्रिंसीपल के पास गए और उन्हें सारे हालात बताए। प्रिंसीपल हैरान रह गए कि एक अनाथ बच्ची के लिए इतने लोग जब सहायता कर रहे हैं तो मैं अवश्य इसे स्कूल में रखूंगा। उन्होंने दाखिले के लिए फार्म दे दिया।

फिर अध्यापक ने कहा कि सर वह इतनी फीस नहीं दे पाएंगे, परन्तु प्रिंसीपल ने कहा कि इसे 'ए' सैक्शन में भेज दो और यह कहने के साथ ही उनकी आंखों में आंसू भर आए।

मेघा उनकी उमीदों पर खरी उतरी, वह पी.एम. टी में अच्छे रैंक से पास हुई, मुहल्ले वालों ने मिलकर पार्टी दी, अब वह अनाथ नहीं थी, वह सब की चहेती थी। उसको M.B.B.S. में दाखिला मिल गया और चन्द सालों में वह डाक्टर बन गई, मालती ने उसकी एक डाक्टर लड़के से शादी कर दीं उसने M.D. भी कर ली। मालती जी ने अपने बच्चों की सहायता से उसे

कलिनिक खोल दिया।

एक दिन वही प्रिंसीपल उस शहर में किसी काम से आए, वह अपना ब्रीफकेस लेकर आगे बढ़ रहे थे, तो मेघा अपनी कार खड़ी करके उनके पीछे भागी और पीछे से आवाज़ दी, 'सर' ज्योंहि उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो एक खूबसूरत नौजवान लड़की को देखकर पूछने लगे, 'बेटी, आप कौन हो?' मेघा ने बताया सर मैं मेघा हूं, आपकी वही विद्यार्थी जिसको बिना टैस्ट के ही आपने दाख़िल कर लिया था। प्रिंसीपल हैरान रह गए जब मेघा ने बताया कि वह पति पत्नी एक कलिनक चला रहे हैं और नानी उनके साथ ही रहती हैं। प्रिंसीपल साहिब ने उसे और उसके साथ उसकी नन्हीं बेटीं थी उसको आशीर्वाद दिया।

करूणा का पाठ किसी पुस्तक से हासिल नहीं किया जा सकता, यह हृदय की वह भावना है जो किसी दुखियारे का दुख दूर करके उसे नई जिन्दगी प्रदान करती है। इस ओर बढ़ाए एक कदम के साथ कितने कदम साथ बढ़ जाते हैं।

यह कहानी हमें प्रेरणा देती है कि हमें भी ज़िन्दगी में यदि किसी का दुख वा आभाव दूर करने का अवसर मिलता है, तो उसे हाथों से नहीं जाने देना चाहिए, उसमें मदद करने के लिए और हाथ भी आगे बढ़ जाते हैं।

पाठकों की ओर से

आपके द्वारा भेजे गए धर्म जीवन तथा हित स्त्रोत के अंक मुझे लगातार मिल रहे हैं, वास्तव में इन दिनों मेरे लिए ये बहुत कीमती सिद्ध हो रहे हैं। आत्मा की खुराक पढ़कर मेरे मन से आपके लिए बहुत ही धन्यवाद निकला, इसने मुझे अन्दर तक हिलाकर रख दिया, मैंने सोचना शुरू किया कि आज देखती हूँ बनाने वाली गतियां की या बिगाड़ने वाली गतियां की जबाब बिगाड़ने वाली ही मिलता है तो सात्विक भावों की भारी कमी महसूस हुई मुझे पता ही नहीं चलता ये क्यों नहीं बढ़ते। इसलिए जीवन का कुछ बन भी नहीं रहा। फिर धन्यवाद कहना शुक्ररगुजारी नहीं topic भी बहुत अच्छा लगा, आपने एक-एक लड़ी कैसे अलग अलग करके जोर देकर समझाया है, इन लड़ियों को मन में उतार कर इस का पालन करने की जरूरत महसूस हुई है। जब मैं पढ़ती हूँ तो मन में भाव पैदा होते हैं, बाद में वो बात नहीं रहती लेकिन अब सोचा है साथ की साथ लिखा करुँगी जो आप और बहन जी इतनी मेहनतों से लिखते हैं, उसे पढ़कर उसके असरों को लिखकर शायद मैं कुछ न कुछ ऋण परिशोध कर सकूँ। "मैने गंगा अभी सूखी नहीं", एक सभा में शमिल होकर पढ़कर बहन जी का धन्यवाद किया था, एक सभा में शामिल होकर तो लग रहा था, तीन-चार बातें तो जैसे मेरे दिल से ही बहन जी ने लिखी है, मिथ्या से बचना, आत्मा का ज्ञान, सम्बन्धों का ज्ञान तथा मात-पिता के उपकार। ये चारों बातें तो मेरे दिल की ही लिखी थी। आप दोनों स्वस्थ रहें, आपकी लम्बी आयु हो, भगवान के मिशन में आगे से आगे बढ़ते रहें यही कामना करती हूं। आप सबका मंगल हो।

अशोका

अमेरीका के एक विचार शील जन का स्वप्न किस तरह पूरा हुआ?

शायद सन् 1888 ई. में अमरीका के एक बहुत बड़े विचार शील जन ने एक पुस्तक लिखी थी, कि जिस का नाम "परोपकारियों की बादशाहत" था। भूमिका में उस ने लिखा था, कि जिन विचारों का इस पुस्तक में वर्णन किया गया है, उन्हें शायद एक या दो सदी के बाद इन्सानियत समझ सके। वह ईश्वर के विश्वास को त्याग चुका था। प्रचलित मतों के खोखलेपन को उन्होंने अच्छी तरह से प्रगट किया था और मनुष्य प्रकृति का अध्ययन करते हुए उन्होंने लिखा था, कि लाखों और करोड़ों मनुष्यों के हृदय में जो शक्तियां पैदा हो चुकी हैं, वह शक्तियां ऐसे जनों के जीवन में अन्याय और अपहरण का कार्य करा रही हैं। और जब तक मनुष्य का हृदय ऐसी शक्तियों के अधिकार में रहेगा, तब तक अपहरण और अन्याय का कार्य जारी रहेगा। और मनुष्य जगत् में अनमेल भी अवश्य वर्तमान रहेगा। यदि मनुष्य मात्र में कोई उच्च परिवर्तन उत्पन्न करना है, तो यह जरूरी है कि मनुष्यों के हृदयों में ऐसे उच्च बोध शक्ति रूप में उत्पन्न किए जावें, कि जो उन्हें विवश एक दूसरे के हित में लगा दें। इस के भिन्न उन्होंने यह भी लिखा था, कि मैं ऐसा भी अनुभव करता हूँ, कि मनुष्य जगत् के विकास क्रम में एक ऐसा अविर्भाव होगा, जो अपनी ज्योति और शक्ति पहुंचाकर इस पाप भरी दुनिया में पापी जनों के हृदयों में ऐसा उच्च परिवर्तन लायेगा, कि वह एक ओर जानबूझकर किसी की भी हानि करने के अयोग्य हो जाएंगें। और दूसरी ओर जहां तक भी सम्भव होगा, वह कुछ न कुछ दूसरों की सेवा में लग जाएंगे। यह इस नेक जन का स्वप्न नेचर की अपनी गुप्त विधि के अनुसार पूरा हो चुका था और पूरा हो रहा है। ऐसा अद्वितीय और पूर्णत: अनोखा आविर्भाव हो चुका है, कि जो अपनी ज्योति और शक्ति से अधिकारी मनुष्यों में उच्च परिवर्तन ला रहा है। हमें इस प्रकार के उच्च परिवर्तन की असलियत को भी समझने की कोशिश करनी चाहिए। मनोविज्ञान के पंडित कुछ न कुछ बोध करते जाते हैं, कि जब तक किसी मनुष्य के भीतर उच्च भाव उस के आत्मा का अंग न बन जाएं और शक्ति रूप लाभ न कर ले, तब तक ऐसा जन उच्च जीवन धारी नहीं बनेगा। थोड़ी या अधिक परोपकार की लहर अनुभव करना या किसी न किसी समय एक या दूसरी प्रकार का कोई परोपकार का काम कर देना यह साबित नहीं करता, कि ऐसा जन इस अंग के विचार से परोपकारी है। उच्च बोध या उच्च अंग एक या दो बार लहरें उत्पन्न नहीं करता, एक या दूसरे समय में प्रकाश नहीं पाता, वह तो लगातार मनुष्य के हृदय में उच्च लहरें, उत्पन्न करता है और लगातार उच्च क्रियाएं कराता है। मैंने एक सच्ची कथा पढ़ी है, कि तीन चार साल की लड़की की माता गुजर गई, उस के पिता पहले ही गुजर चुके थे। उस यतीम और रोते हुए बच्चे का पड़ोसियों के हृदय पर उस की अवस्था के अनुसार जुदा जुदा असर हुआ। कुछ जनों ने यह भाव प्रकाश किया कि हाय! यह लड़की कितनी अभागी है। यह कह कर संतुष्ट हो गए और अपने-अपने घरों को चले गए। कुछ जनों ने यह भाव प्रकाश किया कि इस को एक यतीम खाने में पहुंचाया जावे और वहां तक पहुंचाने में जो खर्च हो, उसमें हम मदद् करने को तैयार हैं। कौन उस को यतीम खाना में पहुंचावे? उस

के लिए कोई तैयार न था, यतीम खाना दो सौ मील के फैसले पर था, आखिरकार एक स्त्री तैयार हो गई और वह इस बच्चे को साथ लेकर चल पड़ी। रास्ते में वह एक स्टेशन पर उतर गई। वहां से शायद बस पर जाना पड़ता था, वह अपनी एक सहेली के यहां चली गई और उसको सारा माजरा सुनाया। उसकी सहेली के हृदय पर उस कन्या का बहुत गहरा असर हुआ। उसने अपनी सहेली के पास छोड़कर चली गई। अब इस दयावान स्त्री ने दर्जी को बुलाया और कई प्रकार के कपड़े उस के लिए बनवाए। मुश्किल से चार पांच दिन गुजरे थे, कि अचानक उस स्त्री ने उस लड़की को रोते हुए सुना। वह बिल बिलाकर पुकार रही थी, कि काश यदि मेरी अम्मा होती! तो ..... लड़की के इस प्रकाश ने इस स्त्री के हृदय पर जादू का असर किया। उस ने लड़की को छाती से लगा लिया और कहने लगी कि क्या तुम मुझे अपनी अम्मा बनाओगी? बच्ची की खुशी की हद न रही, और वह इस दयावान स्त्री को चिपट गई। और उस दयावान स्त्री का बयान है, कि यह लड़की बड़ी होकर मेरे सम्बन्ध में मेरी अपनी बेटी से भी बढ़कर कृतज्ञ प्रमाणित हुई है। अब इस दयावान स्त्री के हृदय में उस लड़की के लिए दया शक्ति फूट आई बाकी स्त्रियों के हृदय में कुछ न कुछ भाव जरूर उत्पन्न हुआ लेकिन शक्ति रूप में नहीं।

उच्च जीवन के मुसाफिरों के लिए इस उच्च बोध के पाने की अत्यन्त आवश्यकता है कि जीवन उच्च बोधों वा अंगों को शक्ति रूप में पाकर बनता है न कि भाव प्रकाश करने से। और किसी नीच सुख अनुराग से सत्य मोक्ष तब प्राप्त होती है जब उच्च घृणा का भाव शक्ति रूप में वर्तमान हो। कभी-कभी किसी लहर का उत्पन्न होना काफी नहीं है। फिर भी न उत्पन्न होने से अच्छा है। परन्तु जो केवल लहरों की अवस्था में ही संतुष्ट रहते हैं वह अज्ञानी हैं। भगवान् देवात्मा तो उच्च अनुरागों के उत्पन्न करने के कार्य में लगे हुए हैं, और जब तक हमारे हृदयों में यह उच्च अंग शक्ति रूप में उत्पन्न नहीं होंगे, तब तक हमारी उन्नति का कार्य लगातार नहीं होगा, केवल भाव प्रकाश से हमारा मामला हल नहीं होगा।

शरीरिक चाहत से मानसिक चाहत खतरनाक है

जो चाहें वह न मिले, तो उदासी, निराशा स्वभाविक है, लेकिन कभी कभी चाहा मिल जाए, तो भी मन सन्तुष्ट नहीं होता। दर असल चाहत का द्वंद अलग ही होता है। चाहत और असन्तुष्ट भाव एक साथ चलते हैं मान्सिक चाहत शरीरिक चाहत से भी ख़तरनाक है, शरीर की चाहतें तो फिर भी पारिवारिक, सामाजिक मान-मर्यादा से नियंत्रित हो जाती है, लेकिन मान्सिक चाहते तो शुरू होती ही अमर्यादा के साथ हैं,

विचारों मे जितनी सात्विकता वा सद्गुण होंगे चाहत उतनी ही नियंत्रित हो जाएगी इसको नियंत्रित करें, नहीं तो मनुष्य की चाहत असम्भव को पाने की चाहत में भी बदल जाती है। अपेक्षा हीन जीवन जीने की कोशिश करें।

पाप और पुण्य की बुनियाद कहां है?

करोड़ों मनुष्य इस भेद से ही अज्ञानी हैं, कि पाप और पुण्य की बुनियाद कहां है? करोड़ों खुदा परस्त पाप और पुण्य की बुनियाद इस में मानते और बताते हैं, कि कल्पित ईश्वर या परमात्मा के कहलाने वाले आदेशों को पूरा करना पुण्य है, और उन आदेशों का उलंघन करना पाप है। कहलाने वाले खुदा के इलहामी ज्ञान पर अब तक कोई विज्ञान न स्थापन हुआ है और न होगा। विज्ञान और इलहाम की परस्पर सख्त विरोधता है। इलहाम कहलाने वाले खुदा के वचनों पर स्थापित है, जो वचन दरअसल उन धर्म मतों के संस्थापकों के हैं। दर हकीकत कहलाने वाला इलहाम धर्म मतों के संस्थापकों की राए है। जो मनुष्य मात्र के अन्धकार के जमाने की राए है। विज्ञान रायों पर स्थापित नहीं हो सकता। विज्ञान नेचर के अटल नियमों और उसकी अटल घटनाओं पर स्थापित है। क्योंकि सत्य ज्ञान ही नेचर के अटल नियमों और सत्य घटनाओं का है। और सत्य ज्ञान की कसौटी यह है, कि नेचर की गठन में जो बात जैसी है, उसे वैसा ही जानना और बोध करना सत्य ज्ञान कहलाता है। और जिस जन में जब यह योग्यता बढ़ेगी, कि वह नेचर की गठन में जो बात जैसी है, उसे वैसा ही जाने और वैसा ही उपलबध करे, तब वह सत्य ज्ञान की सीढ़ी पर चढ़ने के योग्य होता है। करोड़ों मनुष्य ऐसी योग्यता नहीं रखते वह नेचर को सत्य, स्वयम्भू और अनादि नहीं मानते और खुदा नामी वहम को सत्य समझते हैं, और उस वहम को इस नेचर का पैदा करने वाला मानते हैं। इस वहम के विश्वासी जन इस वहम के कारण दिनों दिन अधिक से अधिक मिथ्या परायण बनते जाते हैं। और झूठे कुसंस्कारों के विश्वासी बनकर विज्ञान से दूर होते जाते हैं। विज्ञान की पहली पौड़ी यह है, कि नेचर सत्य है, इस विशाल नेचर में जो लाखों अस्तित्व उत्पन्न और उन्नत होते हैं, वह इस सत्य नेचर की सत्य शक्तियों के कारण ही होते हैं। इस नेचर की विशाल गठन के चार बड़े-बड़े अंग यह हैं, भौतिक जगत्, उद्भिद जगत्, पशु जगत् और मनुष्य जगत्। भौतिक जगत् बाकी तीनों जगतों की बुनियाद है। भौतिक जगत और उद्भिद जगत को लेकर ही पशु जगत है और पशु जगत के विकास क्रम में ही मनुष्य जगत् उत्पन्न हुआ है। इन जगतों का परस्पर का अति घनिष्ट सम्बन्ध है। इन चारों जगतों के भीतर दो प्रकार का कार्य हो रहा है एक निर्माणकारी कार्य और दूसरा विनाशकारी कार्य। मनुष्य का शरीर और आत्मा दोनों ही इस विशाल नेचर की शक्तियों का दान हैं। और नेचर के विकास और विनाश के नियमों के पूर्ण अधीन हैं। इसलिए मनुष्य का अस्तित्व वहां तक ही स्थिर रहेगा, जहां तक उसके अस्तित्व में निर्माण या विकास का कार्य होता रहेगा और उस दरजे वह पतित होता रहेगा, जिस दरजे उसके अस्तित्व में विनाश का कार्य होगा। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का यह आवश्यक कर्त्तव्य है, कि वह अपने अस्तित्व के निर्माण वा विकासकारी नियमों का सत्य ज्ञान प्राप्त करे और उनके पालन करने की सामर्थ्य प्राप्त करे। और इसी प्रकार विनाशकारी नियमों का

सत्य ज्ञान और उन सब से बचने की सामर्थ्य प्राप्त करे। प्रत्येक मनुष्य के आत्मा में जो निर्माण का कार्य होता है वह सारे का सारा पुण्य कर्मों से होता है, और जो विनाश का कार्य होता है, वह सब का सब पाप कर्मों से होता है।

अब प्रश्न यह है, कि विज्ञान के नियमानुसार पुण्य कर्मों की बुनियाद कहां है और पाप कर्मों की कहां? उन्होंने यह तत्व प्रगट किया है, कि जब कोई मनुष्य अपने सुख को मुख्य रखकर अपनी चिन्ताएं और क्रियाएं करता है, तब सुख का अनुरागी होकर वह अपने हृदय में नाना नीच सुख अनुराग और नाना नीच घृणाएं बढ़ाकर सच्चाई और भलाई का बुरी तरह से गला घोंटने का काम करता हैं। ऐसे नीच अनुराग और नीच घृणाएं मनुष्य को नाना सम्बन्धों में आमिताचारी बनाने के भिन्न अन्यायकारी और अपहरणकारी बना देती हैं। अब मनुष्य की कुल चिन्ताएं और क्रियाएं जो आमिताचार, अन्याय और अपहरण उत्पन्न करती हैं, वह सब की सब पाप कहलाती हैं। और अपने दास मनुष्य को और अस्तित्वों के रूप और गुणों को अनुचित रूप से हानि पहुंचाने में लगा देती हैं। इसी प्रकार औरों के सुख दुख को मुख्य रखकर जब कोई मनुष्य कोई गति कर रहा है तो वह उसके जीवन के लिए विकासकारी होती हैं।

जब एक दुखी मां की पूरी हुई आस

अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को में रहने वाली एनी स्वयं को बड़ा भाग्यवान मानती थी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी और स्नेह करने वाला पति था। एक प्यारे बच्चे की वह मां भी थी। अचानक एक दिन बच्चे को बुखार आया और लाख प्रयासों के बावजूद उसे बचाया नहीं जा सका। एनी पूरी तरह टूट गई। एक दिन उसकी एक मित्र उससे मिलने आई। उसने एनी से कहा- 'एनी! तुम्हारा दुख-दर्द बस दूर हुआ समझो। हिंदुस्तान से एक योगी यहां आया है। वह तुम्हारे दुख को अवश्य दूर कर देगा। तुम उसके पास चलो।' एनी तैयार हो गई। स्वामीजी से मिलकर उनके व्यक्तित्व से एनी बहुत प्रभावित हुई। उसकी मित्र ने स्वामीजी को उसके पुत्र की मृत्यु के विषय में बताया। एनी दुखी होकर स्वामीजी से बोली-'स्वामीजी! मैं क्या करूं जिससे मुझे शांति मिले?' स्वामीजी ने कहा-'मां! शांति का तो मेरे पास भंडार भरा है, किंतु तुम्हें उसकी कीमत चुकानी होगी।' एनी बोली-'मुझे मेरा बेटा चाहिए, स्वामीजी! आप मुझसे जो कीमत चाहें, ले लीजिए।' स्वामीजी ने हंसकर कहा- 'मुझसे सोना-चांदी या हीरे-जवाहरात के रूप में कीमत नहीं चाहिए। तुम्हें इंसानियत का 'सिक्का' देना पड़ेगा।' एनी ने स्वीकृति दी। तब स्वामीजी उसे एक निर्धन बस्ती में ले गए और एक अनाथ हब्शी बालक का हाथ पकड़कर बोले- 'यह रहा तेरा बेटा, तू इसे जितना स्नेह करेगी, उतना ही सुख पाएगी।' स्वामीजी के वचन सुन एनी का गोरी जाति का अंहकार नष्ट हो गया और मातृत्व जाग उठा। उसने हब्शी बालक को हृदय से अपना लिया। वस्तुतः अनाथ, असहाय को अपनाकर उसी में आनंद-धन पाने वाला न केवल सकून पाता है, बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी बनता है।

शुभ संग्राम

श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने मल्लेका (सिरसा) में 16 मार्च 2013 से 19 मार्च 2013 तक सत्संग का प्रोग्राम रखवा। श्रीमान बलदेव सिंह जी 16 मार्च को बाद दुपहिर मानसा पहुंच गए थे। वहां डाक्टर सुबोध कुमार जी गुप्ता और उनके परिवार को मिले, उनकी बहन, उनके पति और बच्चे भी वहां हाजिर थे कुछ देर बाद दो धर्म सम्बन्धियों समेत वह सरसा के लिए रवाना हो गए। सरसा में श्री रंजू जी के घर होकर आए और वहां से मल्लेका के लिए रवाना हो गए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कल्याण से चलकर 4 बजे ही मल्लेका मन्दिर में पहुंच गए थे।

16.3.2013 , रात 8 बजे: सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा में 40 से ऊपर हाजरी थी। सभापति जी ने पूछा कि जिस सभा में हम शामिल हो रहे हैं, इस धर्म का नाम क्या है? एक नौजवान ने देव धर्म कहा। फिर बताया गया कि इस धरती पर अनेकों धर्म हैं। कुछ ईश्वरवादी हैं। देव धर्म में मिथ्या विश्वासों, मिथ्या संस्कारों, वहमों, भ्रमों, झूठे लालच के लिए कोई स्थान नही। झूठे आशीर्वाद, टोने, तावीज़ और ज्योतिष को देव धर्म में नकारा गया है। देव धर्म नेचर के सत्य अटल नियमों पर आधारित है। नेचर के भीतर जो भी घटनाएं होती हैं वह नेचर की विधि के अनुसार होती हैं, उसे नेचर का नियम कहते हैं। कई जन इस भ्रान्ति में रहते हैं कि सब धर्म एक ही हैं, परन्तु यह सत्य नहीं। देव धर्म एक निराला और एक ही सत्य धर्म है। इसे अपनाकर मनुष्य मिथ्या द्वारा होने वाली हानि वा तबाही से बच जाता है। नैतिक वा आत्मिक पतन से बच जाता है, उसका दिमाग सच्चे नियम वा सच्ची घटनाओं के देखने के योग्य हो जाता है। सच्चा धर्म सम्बन्धों में व्यवहारों से ही पता लगता है। देव धर्म केवल एक ही धर्म है, जिसमें सौभाग्यवान जन अपने भिन्न भिन्न सम्बन्धों में अपने नीच वा पतनकारी व्यवहारों को देखने के योग्य हो जाते हैं और असर ग्रहण करके बुरी आदतों का त्याग कर देते हैं। उच्च व्यवहार करने लगते हैं। माता पिता वा अन्य उपकारियों के उपकार देखकर कई सौभाग्यवान कुछ सच्चा ऋण परिशोध भी करते हैं, जिसे देखकर दुनियां हैरान होती है। एक अध्यापक ने अपने ही विद्यार्थी सम्बन्धी चोरी देखकर उसके प्रति शर्मसारी अनुभव की, क्षमा मांगी और घड़ी वापिस की। लोग हैरान होते हैं कि देव समाज क्या काम करती है। एक सरदार ने एक गरीब नौकर के पैरों पर गिरकर क्षमा मांगी और नौकर ने कहा कि स्वर्ग पैदा हो गया। पंडित नेतराम जी जो कई प्रकार से आत्म पतन कर चुके थे, सच्चे परोपकारी और स्त्री जाति के रक्षक देव धर्म ने बना दिए। देव धर्म ने हमें कितना बड़ा वरदान दिया है। देवात्मा के इस महान दान को महसूस कर सकें।

17.3.2013 , सुबहर 9.00 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। हम जिस परिवार में जन्म लेते हैं, स्वाभाविक उसी धर्म मत को अपना लेते हैं। मैं बचपन में सिक्ख वातावरण में रहने के कारण कई पाठों का अभ्यासी हो गया था। एक मुसलमान अध्यापक के असर भी मुझ पर पड़े। कई बार ठाकुर द्वारे जाकर वहां के पूजा पाठ का ज्ञान मिला। परन्तु अपनी ओर ध्यान नहीं गया। देव धर्म मतों में एक को छोड़कर जब दूसरे धर्म को मनुष्य स्वीकार करता है, तो उसकी जिन्दगी में कोई खास फर्क नहीं पड़ता। देव धर्म में

शामिल होकर शुरू में कुछ भला होता है, पर लगातार भला किसी किसी जन का ही होता है। जब तक हमारी नज़र हमारी कमियों की ओर नहीं जाने लगती, भले का मार्ग नहीं खुलता। जब समाज के वातावरण में रोशनी मिलती है, तो अपनी कमियां नज़र आनी शुरू हो जाती हैं, तो फिर भले का मार्ग खुल जाता है। एक कर्मचारी ने मुझे यह शिक्षा देने की कोशिश की कि अपनी माता को प्रणाम किया करो, उन्होंने तुम्हारे लिए बड़ी कुर्बानी और त्याग किया हैं, मैं उनके गले पड़ गया, अपनी यह कमी भी नहीं देख सका।

एक नौजवान का जब इस वातावरण में थोड़ा भला हुआ तो कहने लगा के मैं तो अब अच्छा बन गया हूं, यह सभा हमारे बूढ़े को सुनाने का कृपा करें। परन्तु जब उनका ध्यान अपनी ओर गया तो कहने लगे कि सारी मुसीबत की जड़ तो मैं हूं, जो पिता से लड़ता हूं। रणखण्डी के पण्डित का लड़का वैध बन गया। अपनी बनाई धवन्त्री सुधा से अमीर बन गया। नैतिक गिरावट का शिकार हो गया। पण्डित उसे समझाते, परन्तु उसे समझ नहीं आई पण्डित भी एक दिन में ज़्यादा गन्ने का रस पीकर मर गया। किसी को भी अपना गल्त रूप नज़र नहीं आया।

उच्च वातावरण हमें अपने बोल, बृताव, लेन देन, गुस्सा आदि दिखाता है। यह सच्चे वातावरण की निशानी है। कई बच्चे इस वातावरण में बुरी आदतें त्याग देते हैं। मैंने भी एक सभा सुनकर बचपन में बन्टें कुए में फैंक दिए थे। परम पू० भगवान देवात्मा की ज़रूरत इसीलिए है कि उनके मुबारक दर पर अपना आप देखने की रोशनी मिलती है। कल्याण के एक नौजवान को अपने दो अध्यापिकों का रूप नज़र आया, उनके प्रति अपनी ग़ल्तियां नज़र आई। भरी सभा में पत्नी के पैरों पर गिरकर मुआफी मांगी, अपने अपराध स्वीकार किए। एक नौजवान को इस वातावरण में अपने दोष नज़र आते थे और वह रोने लगते थे ओर भाई पूछता था कि तुम क्यों रोते हो, पर वातावरण में बैठते बैठते जब उसे रोशनी मिली, अपना रूप नज़र आया तो वह भी रोने लगा और यह समझने के योग्य हो गया कि देव ज्योति अपना आप देखने के लिए कितनी ज़रूरी है। डाक्टर मुन्शा सिंह जी को उतनी देर इस दर की कदर सामने नहीं आई, जितनी देर गुरू के असर नहीं मिले और अपनी ग़ल्तियां नज़र नहीं आई। सभा में अच्छा उच्च मण्डल पैदा हुआ।

17.3.2013 , रात 8 बजे: सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि देव धर्म का शिक्षा दूसरे धर्मों से भिन्न है। आम धर्म ईश्वर को जानने, उसके दर्शन करने, ईश्वर प्राप्ति को धर्म समझते हैं। नाम जपना स्तुति करना, बानी पढ़ना या ईश्वर को खुश करने के लिए भजन कीर्तन करने को धर्म समझा जाता है। परन्तु देव धर्म उपरोक्त किसी बात को धर्म नहीं समझता। हृदय में उच्च भावों की उत्पत्ति को देव धर्म, धर्म समझता है। सभापति जी ने नीच भावों वा उच्च भावों में अन्तर बताया। कई नीच भावों के नाम बताए, कुछ उच्च भावों के नाम बताए। फिर शुक्रगुजारी के विषय में ब्यान किया। उपकारियों का ऋृण प्रति उपकार द्वारा ही उतर सकता है। उपकारी का ऋृण उतारना ही शुक्रगुजारी है। इस भाव द्वारा सम्बन्धों में मेल वा प्रेम पैदा होता है। श्रीमान नौध सिंह जी ने उपकारी डाक्टर को भेंट देकर शुक्रगुजारी का परिचय दिया। परम पू० भगवान देवात्मा अधिकारी जनों के भीतर कुछ शुक्रगुजारी पैदा करके उनकी काया कल्प कर देते हैं। सरदार सेवा सिंह जी का उनके उपकारी भाई के सम्बन्ध में सच्ची मुआफी वा पश्चाताप देवात्मा के देव प्रभावों का बहुत सुन्दर

दृष्टांत है। उन भाईयों का सम्बन्ध स्वर्गिय बन गया। सभापति जी ने अपने उपकारियों के प्रति 1-2 घटनाएं बताई। गुरू महाराज को देव वाणी बताई, "जो जन उपकार पाकर प्रति उपकार नहीं करता, वह हमारे निकट खुदगर्ज, कमीना और पापी कहलाता है।" सभापति जी ने यह कामना की कि हम खुदगर्ज़, कमीने नहीं बल्कि शुक्रगुज़ार बनें।

18.3.2013 – सुबह 9 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। जैसे एक पिल्ला नहीं जानता कि उसका जन्म हो गया है, उसकी आंखे भी बन्द होती हैं, उसे अपने विषय में कोई ज्ञान नहीं होता। उसी प्रकार मनुष्य भी अन्धेरे का वासी है। शुरू में तो मनुष्य को बिमारियों का भी ज्ञान नहीं था। मौत के विषय में भी नहीं जानता था कि वह मर गया है। घर में हवादार कमरे होने चाहिए, यह भी नहीं जानता था। खाने पीने का ज्ञान भी धीरे-धीरे आया। परोपकारी और धार्मिक जन भी यह ज्ञान न होने पर हानि उठा जाते हैं। देव समाज के बहुत योग्य कर्मचारी श्रीमान गुरूबख़्श सिंह जी भी इसी अल्पज्ञान के कारण परलोक सिधार गए। गुरू महाराज ने फरमाया है कि शरीर के रोग जानकर भी मनुष्य आत्मा के रोगों के विषय में नहीं जानता, इस प्रकार वह अपने आपको नहीं जानता। एक बड़ा योग्य हलवाई दुकान बेचने के लिए मजबूर हो गया क्योंकि ग्राहकों से उसका व्यवहार अच्छा नहीं था। रूखा बोलने के कारण दुकान बन्द हो गई। बाहर की प्राप्तियों से भी आत्मिक रोग नज़र नहीं आते। एक औरत ने एक लड़की का दहेज देखा, तो पीटने लग गई कि न मुरादों ने मेरे बेटे को लूट लिया, कम दहेज दिया। लोभी और स्वार्थी आत्मिक रोगी होते हैं। उनका इस प्रकार रोना पीटना आत्मिक रोग है। एक M.L.A. के बेटे और दामाद ने लालच और घृणा के वश में होकर पिता का सारे का सारा परिवार कत्ल कर दिया। आत्मिक रोगी ऐसे जुल्म और अनर्थ करने के लिए मजबूर होते हैं। कई चालाक वा लालची लोग भोले भाले साथियों को नशे का रोगी बनाकर उनका शोषण करते रहते हैं। मोगे के एक महान सर्जन शहर छोड़ने के लिए मजबूर हो गए क्योंकि अपने प्रति पब्लिक का अपमान जनक व्यवहार सहन नहीं कर सके। दस्त लग गए, नींद उड़ गई।

काम वासना के रोग कारण हररोज़ बलात्कारों के हड़ आए हुए हैं। यह रोग बहुत व्यापक है। चड्डा भाईयों का कत्ल धन के लालच की हवस का ही नतीजा है। इसी आत्मिक रोग ने प्रवीन महाजन को भाई का कत्ल करने के लिए मजबूर कर दिया। खुद भी ब्रेन हैमरेज से जेल में मर गया। बड़ा सौभाग्यवान है वह जन जिसे अपने आत्मा के किसी रोग का पता लग जाए। देवात्मा का दर मुबारक है, यहां अधिकारी मनुष्यों को अपने आत्मा के रोगों का ज्ञान वा फिकर हो जाता है। एक किसान ने गुस्से में आकर सैंकड़ों मन गेहूं जला दी थी, वह अपने रोग से अनजान था। सारी उमर पत्नी से नहीं बनीं। आत्मा के रोग बहुत नेक, भले और ईमानदार लोगों को भी अपने गुस्से का शिकार बनाते हैं। एक बहुत नेक इन्सान बड़ा अमीर बनने की चाहत में सारी जायदाद गंवा बैठा, आख़िर दिल वा बल्ड्ड प्रैशर का मरीज़ बनकर चल बसा। हमें गुरू की रोशनी पाकर अपने आत्मिक रोगों पर ब्रेक लगानी चहिए। काश! यह रोशनी हम सबको मिल सके।

18.3.2013 , शाम 8 बजे: सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि नेचर के चार जगत हैं, एक निर्जीव और तीन जीवित जगत। जीवित जगतों में कुछ गुण मिलते हैं। हर जीवित वजूद खुराक, पानी, हवा और रोशनी लेता है।

जीवित जगतों में मनुष्य जगत भी भिन्न भिन्न विश्वासों के आधार पर बंटा हुआ है। परन्तु मूल रूप से मनुष्य की बिमारियों के ईलाज एक ही है। मनुष्य शरीर के विकास के नियम भी एक हैं। मान्सिक विकास के नियम भी एक हैं, इसी प्रकार मनुष्यों के नैतिक वा अध्यात्मिक विकास के नियम भी एक हैं। उच्च भावों का विकास ही सब मनुष्य के लिए नैतिक विकास का मुख्य नियम है। मनुष्य की हस्ती का विकास इन उच्च भावों के बिना नहीं होता, हमदर्दी, सम्मान और श्रद्धा, ईमानदारी, पवित्रता, शुक्रगुज़ारी और हानि परिशोध। हानि परिशोध का अर्थ है कि मनुष्य जो नीच गतियां करता है, उनके द्वारा जो विकार उसके भीतर पैदा होता है, उसका उतारना। हानि प्राप्त जन या वजूद की हानि का कफारा करना। इस भाव के सच्चे साधनों के बिना सच्ची शुद्धि नहीं होती। परम पू० भगवान देवात्मा की देव ज्योति के बिना नीच गति नज़र नहीं आती, नीच गति का विकार भी नज़र नहीं आता, उसका शुद्धिकरण भी नहीं हो सकता। परन्तु जब किसी अधिकारी जन को देव ज्योति मिलती है तो गल्तियां अपराध और दोष नज़र आते हैं। हृदय की विकार युक्त अवस्था के लिए दुख और पश्चाताप अनुभव होता है। सभापति जी ने एक साथी सेवक अध्यापक की हृदय शुद्धि की घटना का वर्णन किया। एक काम करने वाले को पुलिस का डरावा सभापति जी ने दिया था, कि जो निर्दोष था। उसकी अब कई प्रकार से सेवा की है। इसी प्रकार सरदार हरनाम सिंह जी का अपने नौकर के गांव पहुंचकर दिली पश्चाताप करके सच्ची मुआफी मांगने की घटना बताई, जिससे दुखिया हृदय को शान्ति मिली। हृदय की सच्ची शुद्धि हानि परिशोध के भाव से ही होती है। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी एक जैन साधु की घटना का प्रभावशाली ब्यान किया। खुद भी उन्होंने एक बज़ुरग को छमकी मारी था। उसका परिशोध करके ही चैन पाई। श्रीमान जी का हृदय ऐसे गुरू पर बलिहार जा रहा था, ऐसे प्रभावों की सब मानव जगत की ज़रूरत जानते हुए कामना की, कि सब अधिकारी जनों को यह ज्योति मिल सके।

<u>थराजवाला : 19.3.2012, शाम 5.30</u> बजे। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। श्री सभापति जी ने बताया कि हम सब मनुष्य अन्धकार वासी हैं। परम पू० भगवान देवात्मा देव ज्योति के दाता हैं। उनकी ज्योति जब अधिकारी हृदयों तक पहुंचती है तो हृदयों का अन्धेरा दूर होता है। एक नौजवान जो अपने मजदूरों से काम लेने के लिए कभी कभी शराब पिला देता था, उसके हृदय तक जब यह रोशनी पहुंची तो उसने सब नशों वा मांसाहार से तोबा कर ली। अपने माता पिता के लिए भी महसूस करने लगा। पिता उसकी तबदीली पर बहुत खुश थे। गुरू महाराज के प्रभावों में हमारे हित का रहस्य छुपा हआ है। यह सारी मानवता के लिए ज़रूरी पदार्थ है। सरदार अनोख सिंह जी 40 साल की उमर में जीवन की बाजी हार चुके थे। डाक्टरों ने कह दिया था। कि अब इनके बचने की कोई उमीद नहीं, परन्तु गुरू महाराज के प्रभावों ने अफीम त्यागने के लिए मजबूर कर दिया। फिर वह गुरू के उपकारों को महसूस करते हुए, लड़कियों का स्कूल खोलकर उसमें सेवाकारी होते हुए 80 वर्ष की उमर तक जीए। श्रीमान जी ने स्वामी गोबिन्द राम जी श्रीमान नेत राम जी की अश्यचर्यजनक तबदीलियों का सुन्दर भावों से वर्णन किया हाजरीन पर गुरू के हितकर्ता रूप, हितकर संगत, वा बचावनहार रूप को पेश किया गया अपने अन्दर आए परिवर्तन का भी हृदय स्पर्षिय शब्दों

में गुरू को धन्यवाद देते हुए किया। बहुत अच्छा वातावरण बना। अगले दिनों की संगत के लिए सभाओं का प्रोग्राम बनाया गया।

20.3.2013 , सुबह 9 बजे: सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी सभापति जी ने बताया कि गन्ने की नसल घास से विकसित हुई है। मनुष्य का विकास भी पशु जगत से हुआ है। विकास का नियम हर समय जारी रहता है। मनुष्य पशुओं की श्रेणी से अलग हो गया, उसका मान्सिक विकास हुआ है। मनुष्य बहुत ज्ञान प्राप्त कर चुका है। पशु जगत से जो उसे सुख के बोध मिले हैं, उनमें भी बहुत उन्नति हुई है। मनुष्य सुखों का अनुरागी होने के कारण अपने भले बुरे का ज्ञान नहीं रख सकता। मनुष्य को यह ज्ञान नहीं कि ताकत वा बहुबल उसे नहीं बचा सकते। ताकत मनुष्य को अन्धकार ग्रस्त रखती है। ताकत के नशे में चूर मनुष्य अपनी और औरों हानि करने के लिए मजबूर है। कई राजनैतिक लोगों की उदाहरणें देकर बताया कि कैसे उनकी ताकत उन्हें बदनामियों वा जेलों में जाने से नहीं बचा सकी। क्योंकि सुख अनुरागी प्रकृति उन्हें अन्धकार ग्रस्त रखती है। उच्च शिक्षा प्राप्त जन भी अपने पशु स्वभाव से ऊपर नहीं उठ सकते। मनुष्य के सुख तो उसे शरीर सम्बन्धी भी अज्ञानी वा मजबूर बना देते हैं। मनुष्य अपने भले बुरे का ज्ञान देव प्रभावों के द्वारा ही प्राप्त कर सकता है। सरपंच, M.L.A. वजीर सब देव प्रभावों के मोहताज हैं। नेचर ने मनुष्य के भले बुरे का बोध देव जीवन धारी देवात्मा के दर पर देकर मनुष्य को सदा के लिए देवात्मा पर निर्भर कर दिया है। धन, दौलत, सुख अनुरागी मनुष्य की तबाही में ही सहायक होते हैं यदि उच्च संगत न मिल सके। इनकी किसी सीमा तक ज़रूरत है, उसके आगे हानि है यह केवल देवात्मा के दर पर आकर ही समझ आ सकती है। 10 किलो मीटर से आकर एक सरपंच साहिब भी इस सभा में शामिल हुए।

20.3.2013 , शाम 5.30 बजे: सभापति श्रीमान बलबहादुर जी। सभापति जी ने बताया कि नेचर में हर घटना के पीछे उसके नियम हैं। हर बच्चा, स्त्री वा पुरूष संगत के द्वारा प्रभावित होता है। उच्च संगत उच्च तबदीली पैदा करती है। नीच संगत नीच तबदीली पैदा करती है। संगत में मनुष्य प्रभाव ग्रहण करते हैं और वह प्रभाव ही तबदीली पैदा करते हैं। शिष्टाचारी जनों की संगत से शिष्टाचार आ जाता है। दुराचारियों की संगत बुरी आदतें डाल देती है। देव समाज की संगत पापों, बुराईयों के लिए घृणा पैदा करती है। उच्च भावों की प्रेरणा पैदा करती है। मैंने इस संगत में आने से पहले उपकारी शब्द भी नहीं सुना था। उपकार क्या होता है, यह जानता ही नहीं था। माता पिता के महान उपकार होते हैं, इस ओर से पूर्ण अन्धकार में था। इस संगत सदका मिथ्या और पापों से मुक्ति मिल गई उपकारी माता पिता के बिना और उपकारी भी नज़र आए। अध्यापिक भी उपकारी नज़र आए। नौकरों के उपकारों ने भी दिल को झंझोड़ा। उनके प्रति कुछ करने के मौके मिलते रहे। दिल अजीब दुनियां में प्रवेश करता रहा। इस संगत के लिए लगाव बढ़ना चाहिए।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी एक लड़की की दुखांत कथा सुनाई जो 17 - 18 वर्ष तक दिल्ली के स्टेशन पर रूलती रही, केवल कुछ देर की बुरी संगत ने उसे न घर का रहने दिया न घाट का। रंगा, बिल्ला ग़ल्त संगत कारण फांसी पर चढ़ गए। रंगे ने बताया कि बिल्ले की 26 - 27 दिन की बुरी संगत ने मुझे पापी, दुराचारी वा कातिल बना दिया, अब इसी नीच संगत के कारण फांसी चढ़ रहा हूं। हमारे जीवनों की रक्षा वा विकास के लिए देवात्मा सत्गुरू के असरों की

Published on 5th of the month
20
अप्रैल - 2013
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

संगत निहायत ज़रूरी है। यह हमारे आत्मा की खुराक है। काश! इस संगत की महिमा को हम समझ सकें।

21.3.2013 , 9 बजेः सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। धर्मों वालों ने अभी तक नहीं समझा कि मनुष्य क्या है? स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं Man is flame of divinity. कबीर जी कहते हैं एक नूर से सब जग उपजा, कौन भला कौन मन्दा। ईसाई मत का विश्वास है Man is a breath of God. असल बात यह है कि ज़्यादातर धर्म मतों को पता ही नहीं कि आत्मा क्या है। परम पू० भगवान देवात्मा ने इस महान रहस्य को खोला है कि मनुष्य सुख अनुरागी है। सुखों का आशिक वा कीड़ा है, सुख अनुरागी का पापाचारी वा मिथ्याचारी होना अवश्यक है। मोह में फंसना ज़रूरी है। अज्ञानी वा अन्धकार ग्रस्त होना अवश्यक है। गुरू गोबिन्द सिंह जी कह गए हैं कि नेह कलंक जब आएगा तो नया वाक्य सुनाएगा। उनकी भविष्य बाणी नये विलक्षण ज़हूर की तरफ इशारा करती है। विनोबा भावे जी ने 16 प्रकार की एम. ए. की थी, उन्होंने कहा था Burn the boats behind. उन्होने कहा कि दो बातें ख़त्म होने के लिए हैं एक तो धर्म जो एक दूसरे का दुश्मन बनाते हैं, दूसरी रांजनीति। दो चीजें बढ़ने के लिए हैं एक विज्ञान और दूसरा नेकी (अच्छाई वा रूहानियत) परम पू० भगवान ने फरमाया है कि मनुष्य अपने आप को नहीं जान सकता। पौंटी चड्डा बहुत गरीबी से उठे थे, अब बहुत बड़ी जायदाद का मालिक बन गया था, यही उसकी वा भाई की मौत का कारण बना। धन का सुख अनुराग उनका घातक बन गया। सुख अनुरागी को अपने हित का ज्ञान नहीं हो सकता। एक पुलिस अफसर अपने बच्चे को छोड़ने के लिए मजबूर हो गया, जब वह नौजवान गायका की ओर आकर्षित हो गया। जैसे अंगीठी की गैस वा गोबर की जहरीली गैस मनुष्य को बेहोश कर देती है, उसी प्रकार सुख अनुराग मनुष्य को बेहोश कर देते हैं। ध न दौलत, जमीन का सुख, नशे का सुख, वासना का सुख सब यही काम करते हैं। मनुष्य सुख का दास है, मनुष्य को अवश्यकता है कि उसकी गुलामी को कोई सही रूप में दिखा सके। सरदार बहादुर फतेह सिंह वजीर थे, उनका कोई बच्चा, मजदूरी कर रहा था (लाल चन्द जी का बेटा) क्योंकि लाल जी जुए में सब कुछ हार गए थे और खुदकुशी करके मर गए थे। इस दर पर आकर सुखों का भयानक रूप नज़र आ जाता है। मैं माता पिता को प्रणाम करना फजूल समझता था, समझो एक पागलपन सवार था। आजकल घपलाबाजों

शेष पेज 7 पर

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts